Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

डॉ. विकास विलासराव पाटील
श्रीमती कुसुमताई राजारामबापू पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपुर
जिला - सांगली, महाराष्ट्र

संसार की सभी भाषाओं में लिखा गया साहित्य समृद्ध एवं वैभवशाली है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशेषता होती है। जिस क्षेत्र में वह बोली जाती है वहाँ की संस्कृति, परिवेश आदि का भाषा पर प्रभाव रहता हैं।व्यक्ति के लिए अनेक भाषाओं का ज्ञान अर्जित करना संभव नहीं होता।वह चाहता है कि संसार कीसभी भाषाओं में लिखित साहित्यिक कृतियां, संदर्भ कोश जैसी महत्त्वपूर्ण जानकारी अपनी मातृभाषा में प्राप्त हो।

वर्तमान जन-जीवन भूमंडलीकरण, बाजारवाद, विज्ञान, तकनीकी तथा जन-संचार माध्यमों से प्रभावित हैं। आधुनिक युग की व्यस्तता भरी जिंदगी से अपने लोगों के लिए समय देना मुश्किल हो रहा है। इसलिए वह सोशल मीडिया का प्रयोग करके अपने विचारोंको पंख लगाता है। सोशल मीडिया के कारण मनुष्य केआदान-प्रदान की स्वाभाविक प्रकृति को गति मिली है। इस आदान-प्रदान की संस्कृति के विकास में अनुवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस संदर्भ में डॉ. बालेंदुशेखर तिवारी कहते है, "संसारभर में प्रयुक्त पाँच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सृर्जनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम है।"[i]

वैश्वीकरण के कारण सभी देश अपनी सीमाओं को लाँघकर विस्तृत रूप में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र में नविनता की खोज कर रही है। लेकिन इस आदान-प्रदान में सब से बडी बाधा है - भाषा। प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा,संस्कृति औरपरंपरा है।अनुवाद एक मात्र साधन है जोदो भाषाओं,संस्कृतियों और सभ्यताओं को आपस में जोडने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

अनुवाद एक बहुत बडा क्षेत्र है, इसकी सीमाओं को हम तय नहींकर सकते। भूमंडलीकरण के इस युग में अनुवादकों की माँग दिनों-दिन बढ़ रही है।अनुवाद की उपयोगिता एवं महत्त्व स्पष्ट करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण कहते है कि, "संसार में ज्ञान असीम है और उस असीम ज्ञान को पाने के लिए जिन्दगी सीमित है। दूसरी बात यह कि संसार का समग्र ज्ञान-विज्ञान किसी एक भाषा में समाहित नहीं है। वह तो सेकड़ो भाषाओं में बिखरा हुआ हैं। संसार की सभी भाषाओँ को सीखना संभव नहीं है।"[ii] संसार के असीम ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुवाद अहम् भूमिका निभाता है और साथ ही हजारों रोजगारों का सृजन करता हैं।निम्नलिखित जगह पर अनुवादक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1) साहित्य क्षेत्र :-

साहित्य मनुष्य की चितवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है।‘साहित्य’ भाषा क्षेत्र में पढ़ा और लिखा जाता था। लेकिन आज साहित्यिक कृतियों ने अपना भाषा क्षेत्र लाँघकर विश्वपटल पर अनुवाद की सहायता से पहुँचतीहैं। विश्व की सभी भाषाओं में प्रतिभासंपन्न साहित्य का सृजन हुआ है। हमारे प्राचीन महाकाव्य रामायण और महाभारत के अनुवाद से ही हमारे इतिहास और संस्कृति की पहचान पूरी दुनिया को हो चुकी है।‘गीताजंली’ का अनुवाद अंग्रेजी में होने से रवींद्रनाथ टैगोर को महाकवि के रूप ख्याति प्राप्त हुई। महाकवि तुलसीदास द्वारा लिखित ‘रामचरितमानस’ महाकाव्य विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवादित हुआ है।

‘’अनुवाद के कारण दो देशों की सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, अध्ययन और अनुसंधान, विचारों की अभिव्यक्ति, व्यापार में वृध्दि, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना आदि को बढावा देकर सामाजिक, वैचारिक, सांस्कृतिक तत्वों की पहचान करना सहज रूप से संभव हो गया है।“[iii]

2) जनसंचार क्षेत्र :-

आधुनिक युग में जनसंचार माध्यम व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आकाशवाणी, दूरदर्शन, शार्ट फिल्म, डॉक्यूमेंटरी, सिनेमा आदि जनसंचार के प्रमुख माध्यम हैं। इस माध्यमों का वैश्विक स्तर हो या देशांर्तगत। अनुवाद की सहायता से संसार की विविध भाषाओं में प्रसारित होता है।

जैसे:- भारतीय संविधान ने 22 भाषाओं को विभिन्न राज्यों की राजभाषाओं के रूप में स्वीकृत किया हैं। मराठी भाषा में प्रसारित समाचार, कार्यक्रमों का अनुवाद अन्य भाषाओं में अनुवाद के कारण प्रसारित हो सकते हैं। इस प्रकार देश-विदेशों में अनुवादक को यह अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

3) प्रिंट मीडिया :-

शिक्षित जन तक पहुँचने के लिए लिखित एवं मुद्रित साहित्य का उपयोग किया जाता है। दैनिक समाचार पत्रों के साथ-साथ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। यह पत्रिकाएँ कृषि, ज्ञान-विज्ञान, व्यापार या वाणिज्य, बाल, शैक्षिक औररोजगारआदि प्रकार की होती हैं। यह प्रत्रिकाएँ संसार की विभिन्न जगह से उपलब्ध ज्ञान स्त्रोतों से प्राप्त होती हैं। यही सामग्री अनुवाद की सहायता से विभिन्न भाषाओं की पत्रिकाओं में आती है। सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं के दप्तरो में अनुवादकों की जरूरत होती हैं।

4) पर्यटन क्षेत्र :-

अनुवाद पेशे का सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र है पर्यटन। विश्व के कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन क्षेत्र पर निर्भर है। मनुष्य की घुमक्कड मूल प्रवृत्ति है। मनुष्य पर्यटन के अनेक उद्देश हो सकते हैं। जिसमें विभिन्न देशों की सभ्यता, संस्कृति को देखना। प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना तथा वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक स्थिति और उसकी विशेषता आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना आदि हो सकते हैं। विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को आपस में संपर्क स्थापित करने के लिए अनुवादक एवं दुभाषिक का सहारा लेना पडता है। ऐसे में हिंदी भाषा के साथ अन्य भाषा का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति जिसे देश-विदेश की भौगोलिक प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक स्थितियों का अच्छा खासा ज्ञान हो वह इस क्षेत्र में अपना पाँव जमाकर रोजगार प्राप्त कर सकता है।

5) फिल्म क्षेत्र :-

फिल्म जगत को ख्याब्बों की जिंदगी कहा जाता है। दर्शकों को प्रभावित करने की अद्भूत क्षमता तथा जन-जन तक पहुँचने वाला गतिशील माध्यम है। विश्व की अधिकतम फीचर फिल्में अनुवाद पर निर्भर है। भूमंडलीकरण के इस युग में फिल्मों का डबिंग भी लोकप्रिय होता जा रहा है। अंग्रेजी फिल्मों का अनुवाद हिंदी में होता है।

जैसे - ज्युरासिक पार्क, टर्मिनेटर, हरी पॉटर, टायटेनिक आदि।

भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में तो अन्य भाषाओं की फिल्मों का हिंदी भाषा में अनुवाद होता है और कही हद तक वह सुपरहिट भी हो जाती है।

जैसे - राउडी राठौर, गजनी, वान्टेड आदि।

दूरदर्शन तथा निजी चैनेलों में प्रसारित कार्यक्रमों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में होता है। वह हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में एक साथ प्रसारित होते हैं।

जैसे- रामायण, महाभारत, विक्रम वेताल आदि।

टी. वी चैनलों में आज के लोकप्रिय चैनलों में डिस्कवरी चैनल, नेशनल जिऑग्राफी चैनल आदि पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम वाईल्ड वर्सेस मैन, फूड फॅक्टरी, इंजिनियरिंग वल्ड आदि हिंदी भाषा में अनुवादित होते हैं।

6) समाचार क्षेत्र :-

वैश्वीकीकरण के युग में संसार के किसी भी कोने की खबर कुछ पल में हमें न्यूज चैनलों में दिखाई देती है। वह खबर एक भाषा में मिलती है उसका अनुवाद विश्वभर की विभिन्न भाषाओं में होता है और एक ही समय में वह संसार के सभी चैनलों में अपनी-अपनी भाषाओं में प्रसारित की जाती हैं। संगीत, खेलकूद, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक गतिविधियों को समाचार के द्वारा जन-जन तक

प्रसारित किया जाता है। इस में बाजार समाचार, शेयर बाजार, नए उत्पादन, व्यवसाय जगत की खबरों को एक भाषा में बनाकर अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाता है।

भारत बहुभाषी देश है। भारत के विभिन्न राज्यों में 22 भाषाओं को 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया गया है। ऐसी स्थिति में अनुवादक अहम् भूमिका निभाता है।

7) शिक्षा क्षेत्र :-

शिक्षा क्षेत्र आज ग्लोबल हो गया है। आज विश्व संसार में इंटरनेशनल पाठयक्रम का स्कूल और कॉलेजों में प्रचलन हो रहा है। पर शिक्षा वैज्ञानिकों का कहना है कि छात्रों को मातृभाषा में शिक्षा देने से उनकी ज्ञानग्रहन की क्षमता तेज गतिसे होती हैं। छात्रों कोराष्ट्रीय तथा वैश्विक ज्ञान से जोडने का प्रभावी साधन हैअनुवाद। इस परिपेक्ष्य में डॉ अर्जुन चव्हाण कहते है - "अनुवाद प्रधानतः ज्ञानार्जन तथा विज्ञानार्जन का मुख्य साधन है। सभी प्रकार की देश-विदेश की ज्ञानात्मक सामग्री हमें अनुवाद के कारण ही उपलब्ध हो सकती है।"[iv]वैश्विक शिक्षा प्रणाली, ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान प्रविधियाँ, पद्धतियाँ आदि को मातृभाषा में रूपातंरित करके आधुनिक ज्ञान देने का प्रयास किया जाता है। भूमंडलीकरण के युग में ग्लोबल क्लास रूम संकल्पना नया रूप ले रही है। इस माध्यम से देश-विदेश के विषयतज्ञ छात्रों को संबोधित करते हैं तथा पढ़ाते हैं। इस स्थिति में दो भाषा का ज्ञान अर्जित व्यक्ति यानी दुभाषिया तथा अनुवादक अपने कौशल से इसे सहजाभिव्यक्ति कराता है। छात्रों को पाठयक्रम मातृभाषा में सहज अनुभूति मिलने में सहायक तथा प्रेरक भाषा बनती है। यह ज्ञानार्जन की सर्वोच्च स्थिति अनुवादक के कारण उपलब्ध होती है।

8) कृषि क्षेत्र :-

भारत देश कृषि प्रधान देश है। भारतीय किसानों ने आधुनिककरण के युग में देश-विदेश की खेती, फसल, उत्पाद बढाने के तौर-तरिके, आधुनिक औजार नयी-नयी पद्धतियों को, तंत्रज्ञान को आत्मसाथ करके अपनी परंपरागत खेती पद्धति का त्याग किया है। जहाँ भारतीय किसान एक एकड में 40 टन गन्ना उत्पाद करता था, आज वह 80 से 100 टन तक उत्पाद बढा चुका है। आज वह एक साल में अपने खेत मे विभिन्न प्रकार की फसल लेकर, उत्पाद क्षमता बढाकर अपने व्यक्तिगत उन्नति के साथ देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसका पूरा श्रेय अनुवादक को जाता है। विदेशो में हो रही खेती, किसानों की स्थिति, आत्मविश्वास, तंत्रज्ञान, पर्यावरण बदल, फसल पर किया जाने वाला छिडकाव आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी किसानों को अपनी भाषा में देते हैं। अनुवादक उनके लिए विदेशी खेतीदूत बन गया है।

9) प्रशासकीय क्षेत्र :-

14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा घोषित किया पर आज भी प्रशासकीय कार्यों में हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। प्रशासकीय व्यवस्था में उसके विभिन्न विभाग होते हैं। केन्द्रीय स्तर से लेकर राज्यस्तर तथा अधिनस्थ कार्यालयों में संपर्क तथा समन्वय स्थापित करना पडता है। विभिन्न प्रकार के कार्यालयीन कामकाज के लिए प्रेसनोट, टिप्पणी, संक्षेपण, पल्लवन आदि कार्यालयीन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है तथा विभागों में अतित के कुछ प्रमाणपत्र, दस्तावेज, संदर्भ पत्र-पत्राचार आदि होते हैं। उन्हें समझने के लिए तथा व्यवहार में प्रयुक्त करने के लिए अनुवादक अहम् भूमिका निभाता है।

10) वाणिज्य क्षेत्र :-

भूमंडलीकरण और उदारीकरण के युग में यह विश्व संसार एक परिवार बना हुआ है। गाँव, राज्य, देश की सीमाएँ खत्म हो चुकी है। प्रत्येक देश, निजी उद्योगपति एवं व्यावसायिक व्यापार का क्षेत्र विस्तृत करना चाहता है। आज विश्व के किसी भी कोने में उत्पादित वस्तु दुनिया के किसी देश के उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए स्थानिय भाषा को प्रधानता दी जाती है। निजी व्यावसायिक तथा उद्योगपति बाजार देश की राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा जनभाषा में अनुवाद करनेवाले अनुवादक को रोजगार प्राप्त करा देती है।

11) क्रीडा क्षेत्र :-

मनोरंजन के साथ खेलकूद व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। देश-विदेशों में स्थानिय खेल से ऑलम्पिक खेल तक विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते है तथा देश-विदेशों में देखे जाते है। आजकल क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, नेमबाजी, शतरंज, ॲथलेटिक, कबड्डी आदि खेल के लिए प्रेक्षक बडे पैमाने पर मिलते हैं। खेल का आनंद मिलने के लिए उन्हें अपनी भाषा में कॉमेंट्री सुनना अनिवार्य होता है। यह सोपस्कर अनुवादक सहज, सरल भाषा में करता है जिससे प्रेक्षक खेल से रू-ब-रू हो सके।

12) विज्ञापन क्षेत्र :-

विज्ञापन को आकर्षक तथा उपभोक्ताओं के मस्तिष्क पर राज करने के लिए विज्ञापन की भाषा सहज, सरल, गेयतात्मक तथा जनभाषा होना अनिवार्य होता है। अगर भारत देश की बात करे तो, यह देश बहुभाषी देश है। ऐसी स्थिति में विज्ञापनों का अनुवाद करना अनिवार्य होता हैं। अनुवादक भाषा क्षेत्र के अनुसार उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए जनभाषा में विज्ञापनों का अनुवाद करता है। वर्तमान काल में हिंदी भाषा बने विज्ञापन भारत देश के साथ विदेशों में सुप्रसिद्ध है।

13) राष्ट्रीयकृत बैंक तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों का क्षेत्र :-

वैश्विकरण के युग ने सारे क्षेत्र में स्पर्धात्मक रूप को बढावा दिया है। जिसके कारण बैंक हो या बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करना तथा उसका स्तर बनाए रखना चुनौती पूर्ण कार्य बना गया है। देश-विदेश के हर क्षेत्र के साथ, हर भाषिकों के साथ व्यवहार करना, ग्राहकों के साथ मैत्रीपूर्ण संपर्क बनाना, तथा उन्हें सुविधाएँ प्रधान करना, उनके साथ मेल-जोल बनाकर बैंक तथा कंपनियां अपना सेल बढाने का और मार्केटिंग का कार्य करती हैं। जो व्यक्ति बहुभाषा का ज्ञान रखता है उसे यह अवसर मिलता है। यह संस्थाएँ जहाँ कार्य करती है वहाँ की भाषा का ज्ञान और कंपनी जिस क्षेत्र की है वहाँ की भाषा का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों का चुनाव करती है।

भारत देश में राष्ट्रीयकृत बैंकों में तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों (भारत की राजभाषा हिंदी और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान) में हिंदी और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान रखनेवाले, हिंदी भाषा से अंग्रेजी में तथा अंग्रेजी से हिंदी भाषा में अनुवाद करने की क्षमता रखनेवाले, हिंदी में परास्नानक डिग्री प्राप्त या हिंदी विषय के साथ अंग्रेजी की परास्नातक डिग्री प्राप्त उम्मीदवारों को कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में सफल अभ्यर्थि को राजभाषा अधिकारी, हिंदी अधिकारी, जुनियर अनुवाद, सीनियर अनुवाद आदी पदों पर कार्य करने का मौका मिलता है।

14) धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र :-

विश्व मानस पटल पर विभिन्न जाति, धर्म, पंथ के लोक आवास करते है। उनके रीति-रिवाज, रूढी-परंपरा, उत्सव-त्यौहार, लोकगीत, साहित्य ग्रंथ और उनकी भाषा अलग-अलग होती है। वैश्वीकरण के कारण मनुष्य विविध जाती-धर्म के लोग, संस्कृति, धर्म तथा ज्ञान-विज्ञान से जुडना चाहता है और अनुवादक की सहायता से वह उनसे जूड जाता है - जैसे कि हिंदू धर्म के ग्रंथ 'रामायण', 'महाभारत' विश्व की विविध भाषा में अनुवादित है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति, विविध कलाओं में संबंध स्थापित करने के लिए और उसके प्रचार-प्रसार के लिए अनुवादक अहम् भूमिका निभाता है। अनुवादक को अनुवाद करने समय शब्दों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए ताकि किसी धर्म या संस्कृति की धरोहर या प्रतिष्ठा को ठेच ना पोहुंचे। इस प्रकार विभिन्न जगह पर अनुवादक के रूप में कार्य करने का सुअवसर मिलते हैं।

निष्कर्ष :-

प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा है, संस्कृति है, परंपरा है। दो भाषाओं, संस्कृतियों और सभ्यताओं को आपस में जोडने का अनुवाद के कारण संभव हो गयाहै।संसार के असीम ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुवाद अहम् भूमिका निभाता है और साथ ही हजारों रोजगारों का सृजन करता हैं। साहित्य,

जनसंचार, प्रिंट, पर्यटन, फिल्म, समाचार, शिक्षा, कृषि, प्रशासकीय सेवा,वाणिज्य, क्रीडा, विज्ञापन, राष्ट्रीयकृत तथा बहुराष्ट्रीय कंपनीयों, धार्मिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों मेंअसीम रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। दो भाषाओं का ज्ञानतथा संस्कृति, समय सूचकता, सुयोग्य शब्दों का चयन, सफल अनुवादक की पहचान है।

---

[i]. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. बालेंदुशेखर तिवारी, पृ. क्र.130

[ii]. अनुवाद चिंतन - डॉ. अर्जुन चव्हाण, पृ. क्र. 17

[iii]. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर - डॉ. विकास पाटील, पृ. क्र. 34

[iv]. अनुवाद चिंतन - डॉ अर्जुन चव्हाण, पृ.क्र.23